

सम्पादकीय
चुनाव आयोग किसका

सर्वोच्च न्यायालय का फैसला आ गया है कि अब चुनाव आयोग का चरम तीव्र सख्तीय को एक समर्थित करेगा, न कि प्रधानमंत्री के इशारे पर नौकरशील के चापलामूल तक पहुंच रहा, जब तक संसद इसके लिए कोई नया कानून नहीं बनाता। यस्ते भारत के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि न्यायपालिका ने विधायिका को उसकी भूमिका और मत्यार्थ इस तरह अदेश देकर समझाइ है। सर्वोच्च न्यायालय के इस फैसले के बाद से सताईया में एकमात्र सन्नाटा है। विषय ने ऐसी थोड़ी-बहुत प्रतिक्रिया से ज्यादा कठुनाएँ की हैं।

वह सन्नाटा बचा है भाई! इसलिए कि सभी जान रहे हैं कि सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला सत्ता व विषय दोनों के पर करत रहा है। जिस हमारा मैं सब नहीं हैं, उसमें तैलिये की बात करना सबकी नग खेल देता है। सर्वोच्च न्यायालय का यह फैसला सताईया की नीति पर यह तीखी टिप्पणी करता है। वह टिप्पणी थी कि यदि हमारी व्यवस्था में थोड़ी भी लोकतात्त्विक आत्मा बची होती तो चुनाव आयोग के वर्तमान अध्यक्ष का इसीपा कब का हो गया होता। सरकार का यह कोई लोकतात्त्विक चरित्र होता तो उसने इस फैसले के तुरंत बाद वर्तमान चुनाव आयोग भंग कर दिया होता तथा प्रधानमंत्री, नेता प्रतिष्ठान, प्रधान न्यायपालिका की समिति ने रातों-रात घैरूप नया चुनाव आयोग गठित कर दिया होता।

ऐसा हुआ होता तो सत्ता पक्ष को अपनी विकृत लोकतात्त्विक छवि सुधारने तथा चुनाव आयोग को अपनी हास्यस्पद श्रिति से बचने का मोका मिल जाता, लेकिन जो लोकतात्त्विक आत्मा कहीं बची नहीं है, उसके कोई लहर उठे तो कैसे? हमारी संसद में भी इसी नैतिक शक्ति नहीं है कि वह खुद संसद संकेतक और -पटरी हुई अपनी गाड़ी को पटरी पर लौटा कर। लोकतात्त्विक का पंच तो है कि उसमें संसद बनती भरे बहुत के बल पर है, पर चलती परस्पर विश्वास व सहयोग के बल पर ही है। ऐसा नहीं होता तो भारतीय संसद के इतिहास में कोई संप्रभु नहीं है इस देश की जनता, जिसने अपना संविधान बनाकर, अपने ऊपर लागू किया है। तो वह संविधान सबका पिता है। पिता के सरकार का दायित्व सबका है, लेकिन न्यायपालिका उसकी खास प्रहरी है। चुनाव आयोग को अनिवार्य रूप से स्वतंत्र व निष्पक्ष होना चाहिए।

इसलिए लोकतात्त्विक नैतिकता का तकाजा है कि सर्वेधानिक संस्थाएं एक-दूसरे की सुरुंगें, एक-दूसरे का सम्मान करें। जिस संसदीय लोकतात्त्विक की ऊत जयती मानने को हम तैयारी कर रहे हैं, वह इतने वर्षों में हमें यह भी याद रखेंगे कि हमारी लोकतात्त्विक संस्थाएं संसद के गर्भ से पैदा हुए हैं, इसलिए इनमें संप्रभु नहीं हैं। संप्रभु ही इस देश की जनता, जिसने अपना संविधान बनाकर, अपने ऊपर लागू किया है। तो वह संविधान सबका पिता है। पिता के सरकार का दायित्व सबका है, लेकिन न्यायपालिका उसकी खास प्रहरी है। चुनाव आयोग को अनिवार्य रूप से स्वतंत्र व निष्पक्ष होना चाहिए।

तवारीखी तहरीर
बदलने की खुशबू

पंकज शर्मा

पहले मुझे द्यो जिसमें, एक जानहूँ बाले कथन पर विश्वास नहीं होता था। इस अति-रूमानी भाव पर यकीन करने के लिए मैं ने दिन-रात एक किए, मगर नतीजा सिफर रहा। मगर पिछले साठ दिनों में एक-एक दिन मेरा वह भरोसा पुढ़ा हुआ है कि दो अलग-अलग बदलने का सा-संदर्भ करने लगें। तब सिर्फ बदलने दिखेंगे, मन तो एक हो जाएगा। जब मन-प्रण एक हो जाएगे तो दोनों बदलने एक-सा संर्वेंगे, एक-सा कोरेंगे और एक-सा नैरेंगे। तब दोनों के प्राण किसी बहुत ऊंची मीठ पर मिर्जे में केंद्र तोते में केंद्र नहीं रहेंगे, वे एक-दूसरे में ही घूल-मिले रहेंगे। वह परम्परा निर्भरता दोनों का जीवन-अधार होगी, क्योंकि दोनों को ही यह अहसास होगा कि एक के न रहने पर दूसरा भी नहीं रहेगा।

दो जिसमें एक जान का मंचन हो तो पहले भी रहा था। नौ साल क्या, दो दशक से हो रहा था। मगर इन दो महीनों में इस मिलन का जो आवेग देखके को मिला, उस ने मुझे तो कृतकृत कर दिया। ये दोस्ती हम नहीं तोड़े को ही ढी-छून पर न्यूट्रिमेंस से सारा सतासीन आलम ऐसा मायूल हो गया कि हारूल गांधी की लोकतात्त्विक संसदवाली एक रात ही रही। गहल संसद में प्रतिष्ठक की आवाज का प्रतीक बन गए थे। वे संयुक्त संसदवाली जाच समिति की मांग करने से बाज नहीं आ रहे थे। संसद में उन्हें खालीश करने का एक ही तरीका था कि संसद में न रहना बासं तो नहीं बजेगी और मेरा मायूल होना है। अगले नायोंको लोकतात्त्विक आत्मकारों के बारे में बात कर दिया है। यह अलग-अलग दो जिसमें एक ही याद और दूसरे एक ही याद है।

शरीर पुरुष की ही ओर प्राण भी पृथक हो तो एक शरीर का मन कुछ करने को होगा और युवा महिलाओं का भर है जो काम और विश्वास के विवरनकारी पाठी पर लौटा करता है। यह अलग-अलग बदलने का सा-संदर्भ करने लगें। तब सिर्फ बदलने दिखेंगे, मन तो एक हो जाएगा। जब मन-प्रण एक हो जाएगे तो दोनों बदलने एक-सा संर्वेंगे, एक-सा कोरेंगे और एक-सा नैरेंगे। तब दोनों के आवेग किसी बहुत ऊंची मीठ पर मिर्जे में केंद्र तोते में केंद्र नहीं रहेंगे, वे एक-दूसरे में ही घूल-मिले रहेंगे। वह परम्परा निर्भरता दोनों का जीवन-अधार होगी, क्योंकि दोनों को ही यह अहसास होगा कि एक के न रहने पर दूसरा भी नहीं रहेगा।

दो जिसमें एक जान का मंचन हो तो पहले भी रहा था। नौ साल क्या, दो दशक से हो रहा था। मगर इन दो महीनों में इस मिलन का जो आवेग देखके को मिला, उस ने मुझे तो कृतकृत कर दिया। ये दोस्ती हम नहीं तोड़े को ही ढी-छून पर न्यूट्रिमेंस से सारा सतासीन आलम ऐसा मायूल हो गया कि हारूल गांधी की लोकतात्त्विक संसदवाली एक रात ही रही। गहल संसद में प्रतिष्ठक की आवाज का प्रतीक बन गए थे। वे संयुक्त संसदवाली जाच समिति की मांग करने से बाज नहीं आ रहे थे। संसद में उन्हें खालीश करने का एक ही तरीका था कि संसद में न रहना बासं तो नहीं बजेगी और मेरा मायूल होना है। अगले नायोंको लोकतात्त्विक आत्मकारों के बारे में बात कर दिया है। यह अलग-अलग दो जिसमें एक ही याद है।

शरीर पुरुष की ही ओर प्राण भी पृथक हो तो एक शरीर का मन कुछ करने को होगा और युवा महिलाओं का भर है जो काम और विश्वास के विवरनकारी पाठी के बारे में बात कर रही है। यह अलग-अलग बदलने का सा-संदर्भ करने लगें। तब सिर्फ बदलने दिखेंगे, मन तो एक हो जाएगा। जब मन-प्रण एक हो जाएगे तो दोनों बदलने एक-सा संर्वेंगे, एक-सा कोरेंगे और एक-सा नैरेंगे। तब दोनों के आवेग किसी बहुत ऊंची मीठ पर मिर्जे में केंद्र तोते में केंद्र नहीं रहेंगे, वे एक-दूसरे में ही घूल-मिले रहेंगे। वह परम्परा निर्भरता दोनों का जीवन-अधार होगी, क्योंकि दोनों को ही यह अहसास होगा कि एक के न रहने पर दूसरा भी नहीं रहेगा।

दो जिसमें एक जान का मंचन हो तो पहले भी रहा था। नौ साल क्या, दो दशक से हो रहा था। मगर इन दो महीनों में इस मिलन का जो आवेग देखके को मिला, उस ने मुझे तो कृतकृत कर दिया। ये दोस्ती हम नहीं तोड़े को ही ढी-छून पर न्यूट्रिमेंस से सारा सतासीन आलम ऐसा मायूल हो गया कि हारूल गांधी की लोकतात्त्विक संसदवाली एक रात ही रही। गहल संसद में प्रतिष्ठक की आवाज का प्रतीक बन गए थे। वे संयुक्त संसदवाली जाच समिति की मांग करने से बाज नहीं आ रहे थे। संसद में उन्हें खालीश करने का एक ही तरीका था कि संसद में न रहना बासं तो नहीं बजेगी और मेरा मायूल होना है। अगले नायोंको लोकतात्त्विक आत्मकारों के बारे में बात कर दिया है। यह अलग-अलग दो जिसमें एक ही याद है।

शरीर पुरुष की ही ओर प्राण भी पृथक हो तो एक शरीर का मन कुछ करने को होगा और युवा महिलाओं का भर है जो काम और विश्वास के विवरनकारी पाठी के बारे में बात कर रही है। यह अलग-अलग बदलने का सा-संदर्भ करने लगें। तब सिर्फ बदलने दिखेंगे, मन तो एक हो जाएगा। जब मन-प्रण एक हो जाएगे तो दोनों बदलने एक-सा संर्वेंगे, एक-सा कोरेंगे और एक-सा नैरेंगे। तब दोनों के आवेग किसी बहुत ऊंची मीठ पर मिर्जे में केंद्र तोते में केंद्र नहीं रहेंगे, वे एक-दूसरे में ही घूल-मिले रहेंगे। वह परम्परा निर्भरता दोनों का जीवन-अधार होगी, क्योंकि दोनों को ही यह अहसास होगा कि एक के न रहने पर दूसरा भी नहीं रहेगा।

दो जिसमें एक जान का मंचन हो तो पहले भी रहा था। नौ साल क्या, दो दशक से हो रहा था। मगर इन दो महीनों में इस मिलन का जो आवेग देखके को मिला, उस ने मुझे तो कृतकृत कर दिया। ये दोस्ती हम नहीं तोड़े को ही ढी-छून पर न्यूट्रिमेंस से सारा सतासीन आलम ऐसा मायूल हो गया कि हारूल गांधी की लोकतात्त्विक संसदवाली एक रात ही रही। गहल संसद में प्रतिष्ठक की आवाज का प्रतीक बन गए थे। वे संयुक्त संसदवाली जाच समिति की मांग करने से बाज नहीं आ रहे थे। संसद में उन्हें खालीश करने का एक ही तरीका था कि संसद में न रहना बासं तो नहीं बजेगी और मेरा मायूल होना है। अगले नायोंको लोकतात्त्विक आत्मकारों के बारे में बात कर दिया है। यह अलग-अलग दो जिसमें एक ही याद है।

शरीर पुरुष की ही ओर प्राण भी पृथक हो तो एक शरीर का मन कुछ करने को होगा और युवा महिलाओं का भर है जो काम और विश्वास के विवरनकारी पाठी के बारे में बात कर रही है। यह अलग-अलग बदलने का सा-संदर्भ करने लगें। तब सिर्फ बदलने दिखेंगे, मन तो एक हो जाएगा। जब मन-प्रण एक हो जाएगे तो दोनों बदलने एक-सा संर्वेंगे, एक-सा कोरेंगे और एक-सा नैरेंगे। तब दोनों के आवेग किसी बहुत ऊंची मीठ पर मिर्जे में केंद्र तोते में केंद्र नहीं रहेंगे, वे एक-दूसरे में ही घूल-मिले रहेंगे। वह परम्परा निर्भरता दोनों का जीवन-अधार होगी, क्योंकि दोनों को ह

श्रीलंकाई टीम की दुर्गति जारी

लगातार दूसरे वनडे में 80 रनों के अंदर सिमटी पारी, मिली बड़ी हार

कोई भी बल्लेबाज नहीं पार कर पाया 20 का आंकड़ा



अॉक्टोबर के लाईंड (एजेंसी)। हारी शिपले ने 31 रन देकर पांच विकेट लिए, जिससे न्यूजीलैंड ने पहले वनडे मैच में शनिवार को श्रीलंका को 198 रन से करारी शिकस्त दी। न्यूजीलैंड ने 15 रन पहले बल्लेबाजी करते हुए 49.3 ओवर में 274 रन बनाए। इसके जवाब में श्रीलंका की टीम 19.5 ओवर में 76 रन पर ढेर हो गई। श्रीलंका का यह न्यूजीलैंड के खिलाफ न्यूनमात्र स्कोर है। यह वनडे में उसका कुल पांचवां न्यूनमात्र स्कोर है। श्रीलंका ने अपना पिछला वनडे जनवरी में भारत के खिलाफ खेला था। उसमें टीम 73 रनों पर आउट हो गई।

न्यूजीलैंड की धातव बॉलिंग - श्रीलंका ने अपने पहले दो विकेट 14 रन के स्कोर पर पांचवा और तीसरा स्कोर 20 रन से तो उसने तीसरा विकेट गंवा दिया। इसके बाद 31 रन के स्कोर पर उसके दो विकेट गिरे। इस तरह से उसकी आधी टीम पहले 10 ओवर के अंदर ही पवेलियन लौट गई। श्रीलंका को केवल तीन बल्लेबाज जोहोर और अंक में पहुंचे जिनमें एजेंली मिथूजू ने सर्वाधिक 18 रन बनाए। न्यूजीलैंड की तरफ पहले ही विश्व कप के लिए कालीफाई कर चुका है। इन दोनों टीमों के बीच दूसरा मैच मॉन्टलावर का क्राइस्टचर्च में खेला जाएगा। तीसीरा और अंतिम मैच श्रुक्लार को हैमिल्टन में होगा। इसके बाद दोनों टीम तीन टी20 अंतर्राष्ट्रीय मैचों की श्रृंखला खेलेंगे। न्यूजीलैंड ने इसपर पहले दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला में 2-0 से जीत दी थी।

यह आईपीएल पृथ्वी शॉ का अब तक का सबसे बड़ा सीजन होगा : रिकी पोटिंग



न्यूजीलैंड (एजेंसी)। पृथ्वी शॉ सबसे तेजतरीर बल्लेबाजों में से एक है और यह निश्चित रूप से उन्हें इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में सबसे रोपांक वाले बल्लेबाजों में से एक कहता है। इस बीच दिल्ली कैपिटल्स के मुख्य कोच रिकी पोटिंग पृथ्वी शॉ से प्रभावित दिव्य हो गए। पोटिंग ने शॉ को रोनों के लिए भूखा पाया और कहा वह न केवल अपने खेल पर बल्कि अपनी फिटनेस पर भी कड़ी महेन्त कर रहे हैं। आईपीएल दिग्यम ने कहा कि यह आईपीएल सीजन तक का अब तक का सबसे बड़ा सीजन होगा।

शॉ ने दिल्ली कैपिटल्स के लिए अब तक का पांच आईपीएल संस्करणों में भाग लिया है जिसमें सीजन 2021 उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ साफित हुआ। उन्होंने 159.14 के स्ट्राइक रेट सहित 31.93 का औसत से 479 रन बनाए। पोटिंग ने कहा, यह अच्छी तरह से प्रत्येकित है कि मेरे पास शुरुआत में कठुना थे, लेकिन यह सिफर अपने आप के प्रति सच्चे होने और सर्वश्रेष्ठ बनने की इच्छा रखने के बारे में है। पोटिंग ने कहा, एक बात जो मैं होना चाहता हूं वह यह है कि मैं आलाद्य पसंद नहीं हूं और मुझे यह पसंद नहीं है कि लंगाम अपनी प्रतिभा का उपयोग नहीं कर रहे हैं। मैं हमेशा यही कहां हूं। पोटिंग ने कहा, और इसलिए एक रोपांक ने शॉ को रोनों के लिए भूखा पाया और उसने शॉ को रोपांक के रूप में यहां चालिया। वे उनमें से एक जो अपने बाट बाटने के लिए भूखा पाया और कहा वह न केवल अपने खेल पर बल्कि अपनी फिटनेस पर भी कड़ी महेन्त कर रहे हैं, तो यह मेरे ऊपर है कि मैं कोशिश करूं और इसे बदला। इसलिए तुरहें पता है, मुझे ऐसा लगता है कि इस सीजन में पृथ्वी शॉ वास्तव में कुछ बिलकुल अलग किया गया है।

इमानदारी से कहूं तो वह बहुत महान है। वह हमेशा हमें स्वतंत्र छोड़ देते हैं और कहते हैं कि यह आपके ऊपर है कि आपको जीतन पर आना होगा और समय का उत्योग करना होगा। लेकिन अप आराम करना चाहते हैं, तो इसके लिए पूर्ण पसंद है और अपके जैसे अच्छे दोस्तों को कुछ चाहिया, तो इसके बारे में मुझमें बात करें या अप मैदान में आरंभिक को बढ़ावा दें।

आईपीएल 2023: मावी ने मुख्य कोच आशीष नेहरा की तारीफ की, पांड्या की कप्तानी पर दिया बयान

अमदाबाद (एजेंसी)। दांपत्र के तेज रखने के प्रयास के लिए मुख्य कोच आशीष नेहरा की सराहना की जो खिलाड़ियों को उनकी क्षमताओं का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने में सक्षम बनाता है। मावी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के 2023 सत्र में गुजरात टाइटस की ओर से खेलेंगे। आईपीएल के 2023 सत्र में गुजरात टाइटस बैंगलुरु के गेंदबाजी कोच के रूप में काम करने वाले आर टीम को पहली बार में खिलाफ दिलाने में सहायता की। गुजरात टाइटस 31 मार्च को नंदेंगोदी स्टडिंग में चैरेंस बैंगलुरु को लिए बहुत अच्छी साफित करने के लिए बहुत अच्छे काम करेंगे।

